I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

E.S.O.-12

भारत में समाज

(Societies in India)

By: *Mala Verma* M.A. (Sociology)

Question Bank Cum Chapterwise Reference Book
Including **Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, Ist Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only	*Typesetting by:* Competent Computers	*Printed at:* Novelty Printer

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*

To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***

No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.

We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

भारत में समाज
(SOCIETIES IN INDIA)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—December, 2017 (Solved)	1-7
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-3
Question Paper—December, 2016 (Solved)	1-6
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1-4
Question Paper—December, 2015 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-4
Question Paper—December, 2014 (Solved)	1-4
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-7
Question Paper—December, 2013 (Solved)	1-5
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1
Question Paper—December, 2012 (Solved)	1-6
Question Paper—June, 2012 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1
Question Paper—June, 2010 (Solved)	1

क्रम सं.	*अध्याय*	*पृष्ठ*
	सामाजिक संरचना : ग्रामीण एवं शहरी	
1.	एकता और विविधता	1
2.	ग्रामीण सामाजिक संरचना	7
3.	गाँव और बाहरी दुनिया	13
4.	शहरीकरण के विन्यास	18
5.	शहरी सामाजिक संरचना	21
	परिवार, विवाह और नातेदारी	
6.	परिवार और उसके प्रकार	25
7.	विवाह और उसके बदलते विन्यास	30

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
8.	नातेदारी–I	35
9.	नातेदारी–II	39
	अर्थव्यवस्था एवं राज्यतंत्र	
10.	ग्रामीण अर्थव्यवस्था	43
11.	शहरी अर्थव्यवस्था	48
12.	गरीबी : ग्रामीण और शहरी	53
13.	राष्ट्रीय राजनीति	57
14.	क्षेत्रीय एवं प्रादेशिक राजनीति	62
	सामाजिक संगठन	
15.	हिन्दू सामाजिक संगठन	66
16.	मुस्लिम सामाजिक संगठन	70
17.	ईसाई सामाजिक संगठन	74
18.	सिक्ख सामाजिक संगठन	77
19.	पारसी सामाजिक संगठन	
	जाति एवं वर्ग	
20.	जाति संरचना एवं क्षेत्रीय विन्यास	82
21.	जाति-निरंतरता एवं परिवर्तन	86
22.	अनुसूचित जातियाँ	89
23.	भारत में वर्ग	93
24.	पिछड़े वर्ग	97
	भारत में जनजातियाँ	
25.	जनजातियाँ : सामाजिक संरचना–I	101
26.	जनजातियाँ : सामाजिक संरचना–II	106
27.	जनजातीय समाज में धर्म	111
28.	जनजातीय समाज एवं आधुनिकीकरण	115

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	महिला एवं समाज	
29.	महिलाओं की प्रस्थिति	120
30.	भारत में महिला आन्दोलन	123
31.	महिलाएँ और उद्यम	127
32.	महिला और शिक्षा	131
33.	महिलाओं के समकालीन मुद्दे : स्वास्थ्य एवं कानूनी पक्ष	135
	सामाजिक परिवर्तन	
34.	नृजातीय सम्बन्ध एवं संघर्ष	138
35.	सामाजिक आन्दोलन	142
36.	विकास, नियोजन एवं परिवर्तन	145
37.	पारिस्थितिकी एवं समाज का भविष्य	148

■ ■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

(June – 2019)

(Solved)

भारत में समाज

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *इस प्रश्न पत्र के तीन भाग हैं। प्रत्येक भाग के निर्देशानुसार उत्तर दीजिए।*

भाग–I

किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 1. क्या भारतीय ग्राम 'लघु गणतंत्र' है? आलोचनात्मक चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-16, प्रश्न 8

इसे भी देखें–ग्रामीण परिवेश व कृषि की प्रधानता होने के कारण भारत की आत्मा गाँवों में बसती है, स्वतंत्रता के पश्चात भारत सामुदायिक विकास ग्राम विकास तथा पंचायती राज विकास के भरसक प्रयत्न किये गए। अति प्राचीनकाल से ही भारत में गणराज्य व्यवस्था का रूप देखने को मिलता है, जिसमें स्थानीय कबीले के लोग अपने मुखिया का चयन करते थे। मौर्य काल में ग्राम स्तर का अधिकारी "ग्रामिक" कहलाता था। मुगल काल में गाँव स्तर पर तीन अधिकारी ''मुकद्दम'' (देखभाल के लिए), "चौधरी" (झगड़े सुलझाने के लिए), "पटवारी" (राजस्व व भूमि कार्य) का कार्य करते थे। साथ ही गाँव में बड़े बुजुर्गों की पंचायत न्याय पंचायत तथा जातीय आधारित होती थी। ब्रिटिश काल में पंचायती राज व्यवस्था शिथिल हो गयी थी, तथापि गांव आत्मनिर्भर थे इसी कारण चार्ल्स मेटकाफ ने गांवों को "लघु गणराज्य" कहा।

प्रश्न 2. भारत में लैंगिक भूमिका स्टीरियो निर्माण में समाजीकरण की भूमिका का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-29, पृष्ठ-120 'परिचय'

प्रश्न 3. स्वातंत्र्योत्तर भारत में अनुसूचित जातियों में सामाजिक गतिशीलता की प्रकृति की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-22, पृष्ठ-89, 'अनुसूचित जातियों में कौन-कौन है?', 'सामाजिक गतिशीलता', पृष्ठ-90, 'स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में अनुसूचित जातियां', पृष्ठ-91, प्रश्न 6

प्रश्न 4. भारत में शक्ति से जाति के संबंध का वर्णन कीजिए।

उत्तर–हर समाज में चाहे वह ग्रामीण हो या नगरीय सभी में शक्ति-सम्बन्धित स्तरीकरण पाया जाता है। प्रत्येक समाज की सामाजिक संरचना में कार्यों का बंटवारा सामाजिक स्तरीकरण के आधार पर होता है। प्रत्येक समाज में पद के अनुसार शक्ति का विभाजन होता है, अत: किसी भी समाज में व्यवस्था को बनाये रखने के लिये यह जरूरी है कि समाज में प्रभुता व अधीनता के सम्बंध हो अर्थात् जहां प्रभुत्वशाली व्यक्ति को आदेश देने के अधिकार हैं, वही अधीनस्थ व्यक्तियों का कर्त्तव्य है कि उन आदेशों का पालन करें और यहीं प्रभुत्व व अधीनता के सबंध अधिकार व कर्त्तव्य से जुड़े होते हैं और इसी से सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखना सम्भव है।

ग्रामीण शक्ति संरचना के परम्परागत स्वरूप के मुख्य आधार जमींदारी प्रथा ग्राम पंचायत तथा जाति पंचायत थे। जमींदारी प्रथा एवं ग्रामीण शक्ति संरचना के अंतर्संबंधों की व्यवस्था मुख्यत: सम्पत्ति भूमि अधिकार पर निर्भर थी। गांव के आर्थिक संसाधनों का बड़ा स्वामी होने के कारण जमींदार शक्तिसम्पन्न होता था। उसकी सत्ता प्राय: पैतृक व स्थानीय होती थी। इस प्रकार भूस्वामित्व के इस विशेष स्वरूप में परम्परागत शक्ति संरचना को एक विशेष स्वरूप प्रदान किया, जिसमें शक्ति का केंद्रीयकरण देखने को मिलता है। गांवों में शक्ति का दूसरा स्वरूप ग्राम पंचायतों में निहित था यद्यपि सम्पूर्ण भारत में ग्राम पंचायतों का संगठन समान प्रकृति का नहीं था किन्तु फिर भी पंचायतें ही इस तथ्य को निर्धारित करती थीं कि गांव में विभिन्न व्यक्तियों के अधिकार क्या होंगे। ग्राम पंचायतों के अधिकार ही ग्रामीण शक्ति संरचना के वास्तविक अधिकार थे। ये संगठन गांवों में कानून और व्यवस्था स्थापित करने के साथ-साथ ग्रामीणों को न्याय भी दिलाते थे। सैद्धान्तिक स्तर पर शक्ति संरचना में पंचायतों का स्थान सर्वोपरि था। परंतु व्यवहारिक रूप में पंचायत की शक्ति प्राय: भूस्वामियों में ही निहित थी। ग्रामीण शक्ति संरचना का तीसरा आधार जाति पंचायतें थीं। जाति पंचायत एक जाति विशेष की वह शक्तिशाली इकाई थी जो एक विशेष क्षेत्र में अपनी जाति के सदस्यों के व्यवहारों का निर्धारण करती थी व जातीय नियमों का उल्लंघन करने वाले को दण्डित भी करती थी। इस प्रकार जातीय पंचायतों में विधायिका तथा न्यायपालिका दोनों के ही अधिकार निहित थे।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

इसे भी देखें–अध्याय-20, पृष्ठ-83, 'जाति संरचना एवं शक्ति'

भाग–II

निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 5. निर्धनता के अध्ययन के संबंध में 'सापेक्षिक वंचन' आधारित दृष्टिकोण का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-54, प्रश्न 1

इसे भी देखें–विकसित देशों में गरीबी को जानने हेतु सापेक्षिक वंचन दृष्टिकोण अपनाया जाता है। इसके अन्तर्गत किसी वर्ग या समूह की गरीबी का आकलन इस अर्थ में किया जाता है कि वह सम्पन्न वर्गों की तुलना में कितना वंचित है। यहाँ निध`न वह वर्ग है, जो संपत्ति, आय, शिक्षा, राजनीतिक सत्ता जैसे साधनों की कमी के कारण सामान्य स्तर के रहन-सहन, गतिविधियों और सामाजिक जीवन में भाग लेने से वंचित होता है।

प्रश्न 6. भारत में नगरीकरण के आर्थिक आयाम की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-48, 'परिचय'

प्रश्न 7. राज्य, राष्ट्र और समाज के बीच अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-59, प्रश्न-7, 6 तथा प्रश्न 5

प्रश्न 8. भारत में 'अन्य पिछड़े वर्गों' द्वारा झेली जाने वाली समस्याओं की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-24, पृष्ठ-100, (अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न)

प्रश्न 9. भारत में जनजातियों पर औद्योगिकरण के प्रभाव का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-28, पृष्ठ-115, 'औद्योगीकरण', पृष्ठ-119, अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न 10. सामाजिक आन्दोलनों में नेतृत्व एवं विचारधारा की भूमिका की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-35, पृष्ठ-142, 'परिभाषा', 'सामाजिक आंदोलन', 'सामाजिक आन्दोलनों का उद्‌भव', 'सामाजिक आन्दोलन में नेतृत्व एवं विचारधारा की भूमिका', 'परिभाषा'

प्रश्न 11. महिलाओं के कामकाजों के प्रमुख निर्धारक'-तत्व कौन-से हैं?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-31, पृष्ठ-128, प्रश्न 1

भाग–II

प्रश्न 12. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) नगरीकरण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-18, 'शहरीकरण का अर्थ', 'परिभाषा', 'शहरीकरण की विशेषताएं'

(ख) स्थानीयकरण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-16, 'स्थानीयकरण'

(ग) प्रबल जाति

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-20, पृष्ठ-85, प्रश्न 6

■■

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारत में समाज
(SOCIETIES IN INDIA)

सामाजिक संरचना : ग्रामीण एवं शहरी

एकता और विविधता

1

परिचय

भारतीय समाज प्राचीन ही नहीं, बल्कि अत्यधिक विविधतापूर्ण समाज है। यहाँ विशाल जनसंख्या निवास करती है। भारत में अनेक प्रजातियों और अलग-अलग धर्मों के लोग रहते हैं, जिनके रहन-सहन और रीति-रिवाजों में भी विविधता पाई जाती है। यही कारण है कि भारतीय समाज संसार के सभी अध्ययनकर्त्ताओं के लिए जिज्ञासा उत्पन्न करता रहा है अर्थात् जिज्ञासा का विषय बना रहा है। युगों-युगों से जन-समाज में एक-दूसरे से भिन्न संस्कृतियों, प्रजातियों तथा भाषाओं के लोगों का समावेश होता रहा है। हमारे समाज में विभिन्न समूहों की सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताएँ एक-दूसरे से भिन्न रूप में विकसित होती रही हैं और समय-समय पर विभिन्न समूहों और समुदायों के बीच एकीकरण होता रहा है। भारतीय समाज एक ऐसा समाज है, जहाँ परम्परा और आधुनिकता की विशेषताएँ एक साथ विकसित होने के साथ-साथ अनेक परिवर्तन उत्पन्न करती हैं। भारतीय संस्कृति में अनेकों परिवर्तन होने के बाद भी परम्पराएँ आज भी अपना प्रभाव बनाए हुए हैं। यह भारतीय समाज की मुख्य विशेषता है और ऐसी ही अनेक विशेषताओं के कारण भारतीय संस्कृति के निर्माण में एक-दूसरे से भिन्न अनेक समूहों और समुदायों का योगदान होने के कारण इसमें विविधताओं का विकसित हो पाना स्वाभाविक है।

यहाँ विविधता का अर्थ असमानता से है, इस असमानता का आधार समाज में रहने वाले लोगों की अलग-अलग प्रजाति, जीवन, धर्म, भाषा और संस्कृति है। दूसरे अर्थ में हम विविधता को विभिन्नता भी कह सकते हैं, जो भारतीय समाज में व्याप्त समूहों और संस्कृतियों की विविधता को दर्शाती है। भारत एक विभिन्नता प्रधान देश है, जहाँ प्रजातियों, धर्मों, जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों की विविधता है। यही कारण है कि भारत अपनी सामाजिक- सांस्कृतिक विविधता के लिए विश्वविख्यात है और अनेक देशों के लोगों पर अपनी इस विशेषता का अमिट प्रभाव छोड़ता है। भारत में विभिन्न प्रकार की विविधताएँ पाई जाती हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. प्रजातीय विविधता–प्रजाति का तात्पर्य व्यक्तियों के एक ऐसे बड़े समूह से होता है जिसमें कुछ विशेष शारीरिक लक्षण पाए जाते हैं; जैसे–त्वचा का रंग, नाक की बनावट, शरीर की लम्बाई, आँखों की बनावट, होठों की बनावट और बालों का रंग व प्रकृति आदि।

2. भाषायी विविधता–भारत में विभिन्न समुदाय व धर्मों के लोग व प्रान्तों के लोग निवास करते हैं, तो स्वाभाविक ही है कि यहाँ भाषाएँ भी अनेक बोली जाती हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारत में भाषायी विविधता पाई जाती है।

3. धार्मिक विविधता–भारतीय समाज अनेक धर्मों, सम्प्रदायों का संगम स्थल है। यहाँ विविध धर्मों के लोगों के निवास की प्रकृति धार्मिक विविधता का बोध कराती है।

4. जातिगत विविधता–भारत में अनेक जातियाँ निवास करती हैं। यहाँ जाति शब्द को दो रूपों में लिया गया है–*(i)* वर्ण, *(ii)* जाति। जाति व्यवस्था का प्रचलन केवल हिन्दुओं में ही नहीं,

www.neerajbooks.com

बल्कि अलग-अलग समुदायों में व्याप्त है। इस प्रकार यहाँ जातिगत विविधता देखने को मिलती है।

5. ग्रामीण नगरीय विविधता—भारतीय संस्कृति एक ग्रामीण संस्कृति रही है। अनुमान लगाया जाए तो यहाँ जनसंख्या का आधे से ज्यादा भाग आज भी गाँव में निवास करता है। ग्रामीण और शहरी लोगों के जीवन में बहुत विविधता पाई जाती है।

6. प्राकृतिक विविधता—भारत को प्राकृतिक दृष्टिकोण से देखा जाए, तो भिन्न-भिन्न स्थानों पर विविधता के कई आधार देखने को मिलते हैं।

7. सांस्कृतिक विविधता—भारतीय परिवेश में विभिन्न स्थानों से आए अनेक लोग यहीं के होकर रह गए और आज भी भारत में रहते हुए अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, सभ्यता को नहीं भूले हैं और इसीलिए कहा जा सकता है कि यहाँ सांस्कृतिक विविधता पाई जाती है।

एकता

एकता से आशय है कि देश में विभिन्न जाति, धर्म, वर्ग एवं भाषाओं के होते हुए भी नागरिक एकता के सूत्र में बंधे हों। एकता देश का एकीकरण करने वाली वह मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो देश के सभी निवासियों में देश के प्रति निजत्व का भाव भरकर देश को संगठित और सशक्त बनाती है।

जहाँ भारत देश का नाम हो और विविधता और एकता का वर्णन हो, वहाँ 'एकता' शब्द को पढ़ते और सुनते ही एक भाव उत्पन्न होता है, जो एक होने की भावना व 'हम एक हैं' को व्यक्त करता है। जहाँ की जनसंख्या में विभिन्न धार्मिक विश्वासों, भाषाओं, प्रजातियों, क्षेत्रीय परम्पराओं तथा विभिन्न प्रकार के व्यवहार होते हुए भी एक मूलभूत एकता दिखाई देती है। *डॉ. वी.ए. स्मिथ* ने ठीक ही लिखा है, "सभी संदेहों के बाद भी भारत में गूढ़ एकता निहित है।"

पं. जवाहरलाल नेहरू ने अपनी पुस्तक '*भारत एक खोज*' में एकता के विषय में लिखा है—"जब से सभ्यता का सूर्य उदित हुआ है, तभी से भारत के मस्तिष्क पर एकता की भावना ने अधिकार कर लिया है। यह मौलिक एकता किसी प्रकार बाहर से थोपी गई वस्तु नहीं है, बल्कि यह आन्तरिक एकता है और यह भारत की आत्मा में व्याप्त है।"

यहाँ एकता से तात्पर्य भारतीय संस्कृति में एकता से है। यद्यपि यहाँ विभिन्न धर्मों के लोग, जातियाँ एवं प्रजातियाँ निवास करती हैं, उनकी भाषाएँ अलग-अलग हैं। रीति-रिवाज, परम्पराएँ एव रूढ़ियाँ अलग-अलग हैं, जीवन का ढंग अलग है तथापि भारतीय संस्कृति में एकता के दर्शन होते हैं। भारत देश जो कि अपने अन्दर अनेकों जातियों, प्रजातियों व प्रान्तों और विभिन्न समुदायों व धर्मों के लोगों को समेटे हुए है और इसीलिए भारत में इसकी एकता का दर्शन होना सम्भव है।

भारतीय समाज की विभिन्नता में एकता की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए *हरबर्ट रिजले* ने कहा है कि "भौतिक और सामाजिक प्रकार, भाषा, धर्म और प्रथाओं की विविधता को भारत में आने वाले किसी भी व्यक्ति को दिखाई देती है। इसके मूल में हिमालय से लेकर कुमारी अन्तरीप तक जीवन की कुछ-न-कुछ आन्तरिक एकता के दर्शन भी किए जा सकते हैं।" वास्तविकता यह है कि यही एकता भारतीय समाज का वह दृढ़ आधार है जिसकी सहायता से हमारा समाज दूसरे समाजों की तुलना में सबसे अधिक संगठित बन जाता है। निःसन्देह एकता ही एक ऐसी कड़ी है, जो अलग-अलग समूहों को एक-दूसरे से बाँधकर रखती है। इस दृष्टिकोण से कुछ प्रमुख तत्त्व व सम्बन्धों को इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं—

1. भू-राजनीतिक एकता—भारतीय समाज में निहित एकता को इसकी पहली कड़ी भू-राजनीतिक एकता में देखा जा सकता है। यह सर्वविदित है कि भारत अपनी भौगोलिक एकता के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ एक ओर हिमालय है, तो दूसरी ओर खुला समुद्र है। राजनीतिक दृष्टि से देखा जाए, तो यह सार्वभौमिकता सम्पन्न राष्ट्र है।

2. तीर्थाटनों की संस्था—भारत की एकता में इसका दूसरा स्रोत का अभिप्राय मंदिर संस्कृति है, जो अनेकों लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। एकता की भावना का विकास करते हैं।

3. समायोजन—यहाँ विभिन्न धर्म व सम्प्रदायों को एक साथ रहते हुए देखकर भी यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ की संस्कृति लचीली है। यहाँ एक-दूसरे से समायोजन आसानी से स्थापित किया जा सकता है।

4. परस्पर निर्भरता—परस्पर निर्भरता को स्पष्ट करने के लिए जजमानी व्यवस्था का उदाहरण सर्वश्रेष्ठ है। इसमें एक जाति दूसरी जाति पर आश्रित रहती है और एक अद्‌भुत समायोजन प्रस्तुत करती है।

5. धार्मिक एकता—भारत में प्राचीन काल से ही अनेक धर्म उदित और विकसित होते रहे हैं। परन्तु यहाँ धर्म एक-दूसरे के विरोधी न होकर एक-दूसरे के पूरक हैं। इस प्रकार यह अनेक धर्मों का मिलन-स्थल होकर धार्मिक एकता का आदर्श उपस्थित करता है।

6. भाषायी एकता—भारत में अनेक भाषाएँ व बोलियाँ बोली जाती हैं। लेकिन सभी भाषाओं का मूल संस्कृत भाषा है, जो यहाँ की मूल भाषा है।

7. सांस्कृतिक एकता—भारत में अलग-अलग प्रान्तों के व धर्मों के लोगों के रहते हुए भी यहाँ की संस्कृति विविध होते हुए भी एकता की झलक प्रस्तुत करती है। सभी एक-दूसरे की संस्कृति का आदर करते हैं तथा अनेक कार्यक्रमों में शामिल होकर एकता का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। भारतीय संस्कृति में मौलिक एकता पाई जाती है। इसलिए यह संस्कृति विश्व में सर्वोच्च संस्कृति है। भारत के निवासियों में जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे—उत्सव, धार्मिक

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

संस्कारों और सामाजिक क्रियाकलापों आदि में सांस्कृतिक एकता ही दिखाई पड़ती है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि भारत में एकता और विविधता किस तरह व्याप्त है। भारत में विभिन्न धर्मों, प्रजातियों, जातियों और सम्प्रदायों का समावेश है, यही तथ्य है जो भारतीय समाज में विधिता के बीच भी एकता स्थापित किए हुए है।

स्वपरख-बोध-प्रश्न

प्रश्न 1. भारत में पाई जाने वाली विविधता के प्रमुख रूप कौन-कौन से हैं?

उत्तर–भारत में अनेक प्रकार की विविधता पाई जाती है। भारत में विविधता के ऐसे अनेक बिन्दु हैं, जिनके आधार पर यह स्पष्ट हो सकता है कि भारत विविधताओं का देश है। विविधता के प्रमुख रूप इस प्रकार हैं–

प्रजातीय विविधता–प्रजाति का तात्पर्य व्यक्तियों के ऐसे बड़े समूह से होता है, जिसमें कुछ विशेष शारीरिक लक्षण व्याप्त होते हैं। जैसे–त्वचा का रंग, नाक की बनावट, शरीर की लम्बाई, आँखों की बनावट, होठों की बनावट, बालों की प्रकृति आदि। भारत की विशालता को देखते हुए यों तो सम्पूर्ण भारत में अनगिनत प्रजातियाँ निवास करती हैं। इनकी शारीरिक बनावट भी भिन्नता लिए हुए होती है। जैसे–अण्डमान क्षेत्र में रहने वाली नीग्रो प्रजाति हिमालय के पूर्व से आने वाली मंगोल प्रजाति, भूमध्यसागरीय प्रजाति, द्रविड़ प्रजाति, नॉर्डिक प्रजाति में शारीरिक बनावट भिन्न होती है, साथ ही इनके खान-पान, रहन-सहन, व्यवसाय, आचार-विचार, मनोरंजन आदि अलग-अलग हैं। इस विषय में समाजशास्त्रियों ने प्रजातियों को अपने दृष्टिकोण से अलग-अलग समूहों में बाँटा है, जैसे हरबर्ट रिजले ने प्रजातियों को सात समूहों में बाँटा है–

(i) तुर्क ईरानी
(ii) भारतीय आर्य
(iii) शक द्रविड़
(iv) आर्य द्रविड़
(v) मंगोल द्रविड़
(vi) मंगोलाभ
(vii) द्रविड़

इस प्रकार भारत की प्रमुख प्रजातियाँ इस तरह हैं–नीग्रीटो प्रोटो-आस्ट्रेलायड, मंगोलाभ, भूमध्यसागरीय, पश्चिमी लघु कपाल, उदीच्य आदि।

भाषायी विविधता–भारत में सर्वत्र अलग-अलग भाषाएँ व बोलियाँ फलती-फूलती रही हैं। इन सभी भाषाओं की लिपियाँ भी भिन्न-भिन्न हैं। भारतीय समाज में भाषा की विविधता स्पष्ट दिखाई देती है। यहाँ की भाषाओं को मुख्य पाँच वर्गों में बाँटा गया है–

(1) **भारोपीय भाषाएँ,** जिसमें हिन्दू, उर्दू, बंगला, असमिया, उड़िया, पंजाबी, सिन्धी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, बिहारी और हिमाली हैं।

(2) **द्रविड़ भाषाएँ,** जिसमें तेलगू, कन्नड़, तमिल तथा मलयालम आदि हैं।

(3) **आस्ट्रिक भाषाएँ,** जो छोटा नागपुर, उड़ीसा, मध्य प्रदेश तथा बंगाल की जनजातियों में बोली जाती हैं।

(4) **तिब्बती-बर्मी भाषाएँ,** जो मणिपुर, सिक्किम तथा नेपाल से लगे अनेक हिस्सों में बोली जाती हैं।

(5) **छोटी भाषाएँ,** जिनका प्रचलन अण्डमान निकोबार द्वीपसमूहों में होता है।

इस प्रकार भारत में भाषायी विविधता होते हुए भी हमारे बीच हमेशा से एक सम्पर्क भाषा रही है। प्राचीन काल में संस्कृत सम्पर्क भाषा थी। मध्यकाल में अरबी-फारसी तथा वर्तमान में हिन्दी-अंग्रेजी भाषाएँ सम्पर्क भाषा के रूप में प्रचलन में हैं।

धार्मिक विविधता–भारत में अनेक धर्मों व सम्प्रदायों के लोग निवास करते हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति एक विविधतापूर्ण संस्कृति है। हिन्दू धर्म भारत का प्रमुख धर्म है। फिर भी यहाँ एक ओर हिन्दू, ईसाई, इस्लाम, सिक्ख, जैन, बौद्ध और पारसी जैसे मुख्य धर्मों में विश्वास करने वाले लोग साथ-साथ रहते हैं, तो दूसरी ओर एक ही धर्म के अनेक समुदायों और मतों में विभाजित हैं। यदि भारत की धार्मिक संरचना पर दृष्टि डाली जाए, तो उजागर होता है कि हिन्दू धर्म मानने वालों का प्रतिशत 81 है, लेकिन एक धर्मनिरपेक्ष समाज होने के कारण प्रत्येक धर्म को न केवल अपने विकास के समान अवसर प्राप्त हुए हैं, बल्कि अपने-अपने धर्मों को मानने की स्वतंत्रता प्राप्त है।

जातिगत विविधता–भारतीय समाज में अनेक जातियों का समावेश है। जाति शब्द का प्रयोग दो अर्थों में होता है–

(1) वर्ण के अर्थ में,

(2) जति के अर्थ में।

वर्ण में व्यक्ति को कर्मों का आधार प्राप्त होता है और जाति में व्यक्ति को जन्म का आधार प्राप्त होता है। जातिगत व्यवस्था केवल हिन्दुओं तक ही सीमित नहीं है, जातिगत विचारों की मान्यता मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख आदि अन्य समुदायों में पाई जाती है।

ग्रामीण-नगरीय विविधता–भारत की संस्कृति एक ग्रामीण संस्कृति रही है। अनुमान लगाया जाए तो जनसंख्या का 76 प्रतिशत भाग आज भी गाँवों में निवास करता है। लेकिन धीरे-धीरे नगरों की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। नगरीय जीवन विधि गाँव की जीवन विधि से बहुत भिन्न होती है। इस भिन्नता से नगरीय ग्रामीण विविधता का बोध होता है।

प्राकृतिक विविधता–भारत में अलग-अलग क्षेत्रों में एक ही समय पर विभिन्न ऋतुओं की जलवायु पाई जाती है। दक्षिणी

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

प्रायद्वीप के समुद्र तटीय क्षेत्रों में वर्षभर मौसम लगभग एक-सा रहता है, तो गंगा के मैदानों में ऋतुएँ हमेशा बदलती रहती हैं। पहाड़ी प्रदेश हमेशा ठण्डे रहते हैं, तो रेगिस्तानी क्षेत्र में गरम जलवायु की प्रधानता रहती है।

कुछ क्षेत्रों में खनिज पदार्थों का बहुतायत है, तो कहीं जंगल फैले पड़े हैं। कहीं वर्षभर वर्षा होती है, तो कहीं वर्षा देखने को भी नहीं मिलती।

सांस्कृतिक विविधता–विविध समुदायों के निवास करने के कारण भारत में सांस्कृतिक विविधता पाई जाती है। यहाँ विभिन्न समुदायों में वेशभूषा में एक स्पष्ट अन्तर नजर आता है। एक ही धर्म के विभिन्न क्षेत्रों में लोगों में खान-पान और परम्पराओं में, रीति-रिवाजों में भिन्नता है। यहाँ तक कि कला-विश्वासों में भी विविधता पाई जाती है।

उपर्युक्त सभी विविधताओं से स्पष्ट होता है कि भारत एक विविधतापूर्ण देश है।

प्रश्न 2. प्रजातीय वर्गीकरण के तीन प्रमुख प्रकारों के नाम बताएँ, जो भारतीय जनसंख्या में अधिक प्रमुख हैं।

उत्तर–प्रजाति का अर्थ व्यक्तियों के एक ऐसे समूह से होता है, जिसमें कुछ विशेष शारीरिक विशेषताएँ पाई जाती हैं, जैसे–त्वचा का रंग, नाक की बनावट, शरीर की लम्बाई, आँखों की बनावट, होठों की बनावट, बालों की प्रकृति आदि। यहाँ विश्व की सम्पूर्ण जनसंख्या की प्रजातियों की झलक देखने को मिलती है। प्रजातीय वर्गीकरण के तीन प्रमुख प्रकार इस प्रकार हैं–

1. नीग्रीटो प्रजाति–नीग्रीटो प्रजाति में काले रंग वाले प्रजातीय समूह के लोग पाए जाते हैं। उनकी त्वचा का रंग गहरा काला और बाल छोटे, घुंघराले एवं होंठ मोटे होते हैं। नाक चौड़ी व चपटी होती है। इस प्रकार की प्रजातियाँ अफ्रीका में निवास करती हैं।

2. मंगोलाभ–मंगोलाभ एक प्रजाति है, जो एशिया के मूल जातीय समूह की माना जाती है। मंगोलाभ प्रजाति में उत्तरी और पूर्वी एशिया के लोग भी शामिल हैं, जैसे–चीनी, जापानी, बर्मी, एस्कीमो और प्राय: सभी अमेरिकन इंडियन इसी प्रजाति में आते हैं। भारत में मंगोलाभ प्रजाति का उदाहरण अंगामी नागा है।

3. पश्चिमी लघुकपाल–इस प्रजाति को निम्नलिखित तीन उप-समूहों में बाँटा गया है–

(i) अल्पेनायड–इस प्रकार की प्रजाति समूह में लोगों की शारीरिक बनावट इस प्रकार होती है–सिर चौड़ा, मध्यम कद, त्वचा का रंग हल्का होता है। यह उप-समूह बंगाल में कायस्थों और गुजरात में बनिया जाति में देखने को मिलता है।

(ii) डिनारिक–इस प्रकार के उप-समूह में शारीरिक विशेषताओं में चौड़ा सिर, लम्बी नाक, लम्बा कद तथा त्वचा का रंग गहरा होता है। यह उप-समूह बंगाल में ब्राह्मणों में देखा जाता है।

(iii) आर्मीनियाई तुल्य–इस प्रकार की प्रजाति के लोगों के शरीर की बनावट बहुत कुछ डिनारिक के ही समान है। इनके सिर का पिछला भाग कुछ ज्यादा ही चिह्नित होता है और नाक उभरी हुई व पतली होती है। मुम्बई की पारसी जाति में यह उप-समूह देखा जा सकता है।

प्रश्न 3. भारत में पाए जाने वाले विभिन्न धर्म कौन-कौन से हैं?

उत्तर–ऋग्वेद में धर्म शब्द का प्रयोग धार्मिक विधियों तथा संस्कारों के रूप में किया गया है। धर्म के मूल उद्देश्य के आधार को देखा जाए तो सत्य को धर्म, कर्म को धर्म, पवित्र पुस्तकों के पठन-पाठन को धर्म, ईश्वर को मानना तथा उसकी उपासना को धर्म, रीति-रिवाजों का पालन करना ही धर्म है।

भारत एक बहुधर्मी तथा धर्मनिरपेक्ष देश है। यहाँ अनेक धर्मों के अनुयायी निवास करते हैं। प्रत्येक समाज में धर्म का इतना महत्त्व होता है कि कोई भी व्यक्ति इसकी अवहेलना करके समाज से अनुकूलन करके कठिनता का अनुभव करता है। धार्मिक विविधता होते हुए भी इसका महत्त्व होता है। भारत के प्रमुख धर्म इस प्रकार हैं–

1. हिन्दू धर्म–विश्व का सबसे प्राचीनतम धर्म हिन्दू धर्म है। सृजन, पोषण और विनाश के आधार पर हिन्दू धर्म में ब्रह्मा, विष्णु और महेश की प्रधानता है। हिन्दू धर्म एक ऐसे सनातन धर्म के रूप में माना जाता है जिसकी स्थापना में ऋषियों तथा मुनियों ने अथक प्रयास किए हैं। प्राचीन वैदिक धर्म के विकसित रूप को हिन्दू धर्म कहा जाता है। हिन्दू धर्म के प्रसिद्ध और पवित्र ग्रन्थों में वेद, पुराण, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवतगीता, श्रीरामचरितमानस आदि हैं। इस धर्म में तीन सम्प्रदाय हैं–वैष्णव सम्प्रदाय, शैव सम्प्रदाय, शाक्त सम्प्रदाय। हिन्दू धर्म के विषय में कहा जा सकता है कि हिन्दू धर्म एक विशाल वृक्ष है और अन्य धार्मिक स्वरूप उसकी शाखाएँ हैं।

2. जैन धर्म–जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर स्वामी थे। उनका जन्म 599 ईसा पूर्व प्राचीन वैशाली गणराज्य के कुण्डा ग्राम नामक स्थान पर हुआ था। उनकी माता का नाम त्रिशला और पिता का नाम सिद्धार्थ था। इस धर्म के दो सम्प्रदाय हैं–(1) श्वेताम्बर, (2) दिगम्बर। इस धर्म की प्रमुख शिक्षा अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य हैं। जैन धर्म अनेकान्त में विश्वास करता है। उनका ऐसा विश्वास है कि संसार में जड़-चेतन सभी पदार्थों में आत्मा विद्यमान है। जैन धर्म कर्म के अनुसार फल तथा पुनर्जन्म में विश्वास करता है। अनेकान्त जैन धर्म का मुख्य दार्शनिक सिद्धान्त है।

3. बौद्ध धर्म–बौद्ध धर्म के प्रवर्तक महात्मा बुद्ध थे। इनका जन्म कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी वन में हुआ था। इनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। महात्मा बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में दिया था। बौद्ध धर्म का पवित्र ग्रन्थ त्रिपिटक है। इस धर्म के दो प्रमुख सम्प्रदाय हीनयान और महायान हैं। बौद्ध धर्म अपनी शिक्षाओं

www.neerajbooks.com